Date - 28-04-20

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. Snehababli 1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. (Hons) - I

Topic - The Doctrine of Momentariness. (Buddhism)

Scanned with CamScanner

बौद्ध दर्शन का क्षणिकवाद (The Doctrine of Momentariness)

बौद्ध दर्शन के कारणता सिद्धान्त 'प्रतीत्यसमुत्पाद' का ही तार्किक विकास क्षणिकवाद है। इसके विकास का क्रम है।

प्रतीत्यसमुत्पाद → अनित्यवाद → क्षणिकवाद

क्षणिकवाद के अनुसार विश्व की प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व क्षणमात्र के लिए ही होता है। क्षणिकवाद का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि सभी वस्तुएँ अनित्य हैं, बल्कि सभी वस्तुओं का अस्तित्व एक क्षण के लिए ही रहता है अर्थात प्रत्येक वस्तु क्षणभंगुर है। (सर्वं क्षणिकम्)।

क्षणिकवाद के समर्थन में तर्क

क्षणिकवाद के सिद्धि के लिए अर्थक्रियाकारित्व का तर्क दिया जाता है। अर्थक्रियाकारित्व का अर्थ है कि किसी वस्तु की सत्ता को तभी तक माना जा सकता है जब उसमें अर्थक्रियाकारित्व अर्थात् किसी कार्य को उत्पन्न करने की शक्ति या क्षमता हो) कहा भी गया है –

" अर्थक्रियाकारी ... — ... — "

Scanned with CamScanner

जब किसी वस्तु में अन्य वस्तु को उत्पन्न करने की शक्ति होती है तब वह क्षणिक होती है। यदि वह स्थायी एवं अपरिवर्तनशील होती तो फिर उसमें किसी वस्तु की उत्पत्ति करने की शक्ति नहीं होती, फलस्वरूप उसकी सत्ता भी नहीं होती। उदाहरण के लिए बीज क्षणिक है और इसलिए सत है। यदि बीज को अंकुर में ~~परिवर्तित~~ परिवर्तित होने से पहले की स्थिति में निष्क्रिय मान लें तो फिर उसमें अंकुर जैसी सद्वस्तु की उत्पत्ति ही नहीं हो सकती। यदि बीज को नित्य मानें तो उसमें पौधे की उत्पत्ति निरन्तर होती रहती। परन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं होता।

बीज अंकुर या पौधे की उत्पत्ति करने के पूर्व भी प्रतिक्षण परिवर्तित होते रहता है। इन क्षणों में वह प्रत्येक अगले क्षण में अपने सदृश्य बीज को उत्पन्न करता रहता है। इस प्रकार बीज कभी निष्क्रिय नहीं होता। जब वह बीज मिट्टी एवं जल आदि को

बाकर अंकुर के रूप में परिवर्तित होता है तो अब केवल परिवर्तन या सन्तान का स्वरूप बदल जाता है। परन्तु परिवर्तन का स्वरूप बदलने पर भी वह पूर्व की भांति क्षण-क्षण परिवर्तित होते रहता है।

बीज की तरह ही संसार की सभी वस्तुओं का अस्तित्व भी क्षणमात्र होता है। बौद्ध दार्शनिक जब इस सार्वभौम परिवर्तन के सिद्धान्त को आत्मा पर लागू करते हैं तो आत्मा भी विज्ञानों के प्रवाह के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

आलोचना :

(i) क्षणिकवाद को मानने से स्मृति एवं प्रत्यभिज्ञा की व्याख्या कठिन हो जायेगी।

(ii) शंकर के अनुसार क्षणिकवाद बन्धन और मोक्ष की स्थिति को असम्भव बना देता है।

(iii) क्षणिकवाद कर्म-नियम का खंडन करता है।

(iv) क्षणिकवाद के आधार पर कार्य-कारण का

Scanned with CamScanner

सम्बन्ध भी तर्कतः नहीं समझाया जा सकता। यदि एक कारण एक ही क्षण रहता है और अगले क्षण नष्ट हो जाता है तो फिर उससे कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

Scanned with CamScanner